प्रतिमानाटक

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी,
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

महाकवि भास संस्कृत किंवा भारत के प्राचीनतम नाटककार है। प्राचीन ग्रन्थकारों ने महाकवि भास का नामोल्लेख बड़े आदर से किया है और उसकी यशःप्रशस्ति गाई है। भास का प्राचीनतम उल्लेख महाकवि कालिदासविरचचित मालविकाग्निमित्र में प्राप्त होता है।

महाकवि भास के नाम से 13 नाटक उपलब्ध हैं। इनमें से प्रतिमानाटक का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस नाटक का उपजीव्य वाल्मीकि रामायण है। इस नाटक में रामायण की घटना राम के वनवास से लेकर राज्याभिषेक पर्यन्त वर्णित है। जिस समय भरत अपने मामा के यहाँ से लौटते हैं तो मार्ग में उनको वह स्थान मिलता है जहाँ उनके दिवंगत पूर्वजों की प्रतिमाएं संगृहीत की गयी थीं। उनमें अपने पिता दशरथ की प्रतिमा देख भरत चकित हो जाते हैं और उनको महा भयावह घटना की सूचना मिलती है। जिस समय राम रावण से युद्ध करने को तैयार होते हैं, भरत सेना द्वारा उनकी सहायता करते हैं। यह घटना रामायण से भिन्न है। सीता के स्वयंकर में असफल होने पर रावण परशुराम को राम के विरुद्ध उकसाता है और सूर्पणखा को मन्थरा के रूप में भेजता है। रावण-राम का विरोध आदि से अन्त तक दर्शाया गया है।

प्रतिमानाटक का अंकविभाजन-

प्रथम अंक

महाराज दशरथ के राजप्रासाद में राम के राज्याभिषेक की तैयारी रही है। महाराजा की आशा से अभिषेक की पूर्ण तैयारी कर की गई। प्रतिहारी उनकी आशा के सम्बन्ध में कञ्चुकी से सारी बातें जानना चाहती है। कञ्चुकी द्वारा प्रतिहारी को राजा की सारी स्थिति का पता चल रहा है। राजा, राजसिंहासन एवं मंगल कलश की तैयारी पूरी हो चुकी है। राजपुरोहित अभिषेक के लिए राजा की प्रतीक्षा कर रहे थे कि सहसा अभिषेक के बाजे बन्द हो गये। रामको ही कठना पड़ता है। उन्हें वन

जाने की आज्ञा मिलती है। वन जाने से पूर्व राम ने सीता के आग्रह पर लक्ष्मण को और लक्ष्मण की प्रार्थना पर सीता को वन जाने की अनुमति देकर, उन दोनों के साथ वन के लिए प्रस्थान किया।

द्वितीय अंक

इस अंक में शोकविह्वल दशरथ का मार्मिक चित्रण हुआ है। राम को बन जाने से रोकने में असमर्थ महाराज शोकोन्मत्त हो उठे। उन्होंने अपनी चेतना खो दी। इसी बीच अयोध्या के बाहर राम, लक्ष्मण और सीता को छोड़कर सुमन्त्र के आगमन और से रामवनगमन का समाचार सुनकर महाराज दशरथ मूर्च्छित होकर गिरे और निष्प्राण हो गये।

तृतीय अंक

भ्रातृप्रेम की प्रतिमूर्ति भरत ननिहाल से लौटने वाले थे। मृत महाराज दशरथ की प्रतिमा स्थापित हो रही थी। इस अवसर पर अन्तःपुर की रानियाँ वहाँ उपस्थित होने वाली थीं। पिता की अस्वस्थता का समाचार सुनकर आकुल भरत अयोध्या की ओर लौट रहे थे।उन्हें यह प्रतिमागृह देवालय सा प्रतीत हुआ। देवदर्शनार्थ वे प्रतिमागृह में पहुँच गये। देवकुलिक ने उन्हें क्रमशः दिलीप, रघु और अज की प्रतिमाओं का परिचय दिया। उन्हें पता चला यह देवालय नहीं प्रत्युत उनके पूर्वजों का स्मारक गृह है। प्रतिमागृह में स्वर्गीय महाराज दशरथ की स्थापित प्रतिमा को देखते ही भरत मूर्च्छित हो गये। मूर्च्छा टूटने पर भरत को राम वनगमन तथा दशरथ मरण का वृत्तान्त सुनते ही भरत पुनः चेतनाशून्य हो गये। इसी बीच राजमाताएँ भी वहाँ उपस्थित हो जाती हैं। भरत ने अपनी अनुपस्थिति में इस अनर्थ का मूल कारण अपनी माँ कैकेयी को ही समझा। इसलिये खुले शब्दों में उन्होंने अपनी माँ कैकेयो की भर्त्सना की। वृद्ध मंत्री सुमन्त्र को साथ लेकर राम को जंगल से लौटा लाने के लिये अयोध्या से प्रस्थान किया।

चतुर्थ अङ्क

राम लक्ष्मण और सीता के साथ वनवासी बने दण्डकारण्य में थे। भरत सुमन्त्र को साथ लेकर राम की कुटिया पर पहुँच गये। भरत की आवाज पहचानते ही राम उनसे मिलने के लिए उत्सुक हो गये। बातचीत के बाद भरत राम की पादुका लेकर अयोध्या लौट गये। भरत की शर्त राम ने मान

ली। वनवास की अवधि समाप्त होते ही वे अपना राज्य भार संभाल लेंगे। इस बीच भरत उनका प्रतिनिधित्व करेंगे।

पञ्चम अङ्क

पितृश्राद्ध के लिए राम चिन्तातुर थे। सहसा अतिथि की आवाज सुनकर राम बाहर आ गये। कपटी परिव्राजक के रूप में रावण उपस्थित था। राम ने परिव्राजक का अतिथि सत्कार किया। आतिथ्य ग्रहण करने के बाद अतिथि ने राम को श्राद्ध के लिए स्वर्णमृग के निवाप का उपदेश दिया। स्वर्णमृग को देखते ही राम ने उसका अनुसरण किया। तीर्थागत कुलपति की अभ्यर्थना में लक्ष्मण पहले ही कुटीर छोड़ चुके थे। आतिथ्य के लिये सीता बाहर रुकी थीं। एकान्त देखकर रावण ने सीता को अपना असली परिचय दिया। रावण ने अवसर का लाभ उठाकर बलात् सीता का अपहरण किया। अपहृत सीता का करुण क्रन्दन सुनकर जटायु ने मार्गावरोध करना चाहा।

षष्ठ अङ्क

रावण और जटायु का आकाश में युद्ध ठन गया। राम की अनुपस्थिति में सीता को छुड़ाने के लिए जटायु ने अपने जान की बाजी लगा दी। भयङ्कर युद्ध के बाद जटायु की मृत्यु हो गई। जनस्थान के दो ऋषिकुमार सीताहरण और जटायुवध की घटना से अवगत कराने के लिए राम को ढूँढने निकले। जनस्थान से लौटकर वृद्ध सचिव सुमन्त्र ने सीताहरण की सूचना भरत को दी। पहले तो इस दुःखद घटना को उन्होंने पर्याप्त छिपाने की चेष्टा की पर असत्य भाषण के भय से इसे छिपा न सके । भरत ने इस दुःखद समाचार का सारा क्रोध कैकेयी पर उतार दिया। अन्ततः कैकेयी ने अपने दोष का परिहार तथा राजा की शापकथा का सम्पूर्ण भेद भरत को समझाकर शान्त किया। सुमन्त्र के साक्ष्य पर भरत ने इसे स्वीकार किया। इसके बाद भरत ससैन्य रावण पर आक्रमण की तैयारी में लग गये।

सप्तम अंक

रावणविजय के बाद राम पुनः जनस्थान पहुँचे। लक्ष्मण और जानकी उनके साथ ही थे। परस्पर तीनों में पूर्व परिचित स्थानों के सम्बन्ध में बातें चल ही रहीं थीं कि ससैन्य भरत के आगमन की उन्हें सूचना मिली। भरत के साथ वृद्ध सचिव सुमन्त्र तथा कैकेयी प्रभृति माताऐं भी आई थीं। सब के सामने

ही भरत ने राम को उनका राज्यभार समर्पित कर दिया। महारानी कैकेयी के आदेश से राम ने अपना राज्यभार स्वीकार कर लिया।

संवाद योजना किसी भी नाटक का महत्त्वपूर्ण अंग होता है। प्रतिमानाटक के संवादों में वे सब विशेषताएं हैं जो नाटकों के संवादों में होती हैं। प्रतिमानाटक के संवाद शृङ्खलाबद्ध है, संक्षिप्त हैं, ओजस्वी है, प्रभावोत्पादक हैं, स्वाभाविक हैं और इनमें अभिव्यञ्जना शक्ति विद्यमान है। प्रतिमानाटक में कहीं-कहीं प्रतिरूपकात्मक संवाद भी हैं। इस नाटक के संवादों में जिज्ञासा, रोचकता, तत्त्वनिरूपण, आत्मचिन्तन, समस्याओं की समुपस्थिति और उसका समाधान, स्वाभाविकता और सूक्तियों का प्रयोग- ये विशेषताएं प्रायः दृष्टिगोचर होती हैं।

महाकवि भास ने पात्रों के चरित्र-चित्रण करने में अपूर्व कुशलता प्रदर्शित की है। पात्रों की मनोगत भावनाओं का चित्रण करने में वे विशेष कुशल हैं। भास के पात्र एक अनुपम आदर्श तथा सामाजिक सुव्यवस्था के आदर्श को प्रस्तुत करते हैं। प्रतिमानाटक में रामायण से कथानक को लेकर भास ने चरित्रगत विशेषताओं को भी सुरक्षित रखा है। पुत्रवत्सल दशरथ, सत्यव्रती, आज्ञापालक एवं अनुजों के प्रति वात्सल्य रखने वाले राम, बड़े भाई के प्रति अनुरक्त लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न, पति का हर अवस्था में अनुगमन करने वाली सीता, स्नेहमयी माताएं और स्वामिभक्त सुमन्त्र भारतीय जनों के आदर्श को उपस्थित करते हैं।

प्रतिमानाटक में आदि नाटककार भास का काव्य-सौन्दर्य निश्चय ही उच्च कोटि का है। उन्होंने यथासम्भव प्रायः छोटे-छोटे असमस्त सरल वाक्यों का प्रयोग किया है, जो कम-से-कम शब्दों में अधिक भावों की अभिव्यक्ति करने में समर्थ हैं।

महाकवि भास अलंकार प्रेमी हैं। अभिनय की वर्णनात्मक शैली इसका मूलभूत कारण है। इनके अलङ्कारों का प्रयोग कहीं भी प्रदर्शन मात्र के लिए नहीं है। इनके अलङ्कार प्रयोग ने रसचर्वणा में कहीं व्याघात नहीं पहुँचाया प्रत्युत इनके सारे अलङ्कार रसोपकारक हैं। शब्दालङ्कारों एवं अर्थालङ्कारों के प्रति इनका समान अनुराग है। एक ओर इन्हें उत्प्रेक्षा वल्लभ कहा जा सकता है, तो दूसरी ओर उपमाप्रणयी। भास की काव्यकला की त्वचा सी लगती हैं इनकी उपमाऐं। इनकी अमूर्त भावनाओं को इनकी उपमाएँ मूर्तरूप देती हैं और मूर्तरूप को जहाँ ये उपमाएँ मार्मिक बनाती हैं वहीं मानवप्रकृति में

तीव्र रागात्मक साहचर्य भी स्थापित करती हैं। इनकी उपमाओं के उत्स प्राकृतिक ऐश्वर्य एवं जीवन की विभिन्न अनुभूतियों के भीतर हैं।

प्रतिमानाटक के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि भास की भाषा सरल और सुबोध है। प्रसाद और रम्यता गुणों ने प्रतिमानाटक को अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया है।

डॉ० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी